The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 6 | June 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

जापानी छात्रों की क्रूर-कथा बकौल शिंतारो इशिहारा के उपन्यास

डा. मुन्नी चौधरी

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, नागालैंड विश्वविद्यालय, कोहिमा परिसर, मेरिमा, कोहिमा नागालैंड – 797004,

munni@nagalanduniversity.ac.in

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15853824

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 23-06-2025

Published: 10-07-2025

Keywords:

उत्पीड़न, विद्यार्थी, कथावस्तु, क्रूर व विध्वंशक, दागदार

ABSTRACT

जापान के इतिहास में दूसरा विश्वयुद्ध एक ऐसी त्रासदी लेकर आया, जिसने जापानियों के शांत जीवन-शैली में उथल-पुथल मचा दिया। हिरोशिमा और नागासाकी पर किये गये अमेरिकी परमाणु हमले ने जापानियों को क्षणजीवी, अस्तित्ववादी, स्वकेंद्रित, व्यक्तिवादी व अपनों के प्रति ही क्रूर बना गया। हताशा से पतन के गर्त में जाने और जीने के प्रतिनिधि वहां के स्कूल व कालेज-यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी थे। उनका यह क्रूर व विध्वंशक दौर लगभग बीस वर्षों तक रहा। लेकिन इन बीस वर्षों के उनके कुकृत्यों ने जापान के इतिहास को दागदार कर गया। स्कूल-कालेज का विद्यार्थी अपने ही लिए जी रहा था। दोस्त कब दुश्मन बनकर रौंद दे किसी को भी पता नहीं चलता था। इस दौर में सर्वाधिक उत्पीड़न स्त्रियों का हुआ। वह भोग्या मात्र बन गई थी। वह जिसका भी हाथ पकड़ती, वह कुछ देर कुलांचे मारकर फिर किसी और के पास चला जाता था। मानवीय संवेदना का ऐसा ह्रास जापान के इतिहास की पहली घटना थी। मानवीयता के इस घोर क्रूर व बर्बर पक्ष को चित्रित करनेवाले लेखकों में सर्वाधिक उल्लेखनीय नाम शिंतारो इशिहारा का है। उन्होंने लगभग दो दर्जन किताबें लिखी, जिनमें ‘ताइयो नो किसेत्सु’ (1955) और ‘शोकेई नो हेया’ (1956) सबसे महत्वपूर्ण हैं। शिंतारो इशिहारा स्कूल के छात्र जीवन से ही लिखने लगे थे। सन् 1956 में विश्वविद्यालय में उनका ग्रेडुएशन था, उसी साल उन्हें उनके पहले उपन्यास ‘ताइयो नो किसेत्सु (भाड़े का मौसम) पर जापान

का सर्वाधिक प्रतिष्ठित अकुतागावा सम्मान दिया गया था। उस समय उनकी उम्र लगभग चौबीस साल थी। इस आलेख में मैं शिंतारो इशिहारा के इन्हीं दो छोटे उपन्यासों पर केंद्रित रहूंगा। उपन्यासों की कथावस्तु के केंद्र में टोक्यो का जापानी विद्यार्थी वर्ग है। कथावस्तु इतनी सघन और चित्रात्मक है कि पाठक एक पल को हट नहीं पाता। मेरे लिए ये दोनों उपन्यास विलक्षण और प्रभावशाली हैं। प्रभावशाली इतने कि सतरह साल पहले पढ़े गए इन उपन्यासों का हर संदर्भ मुझे याद है। मैं इसका कुछ भी भूल नहीं पाया और लगता है कि जब तक लिख न लूं तब तक भूल भी नहीं पाउंगा। दूसरी बात कि जापान की बर्बादी के 79वें साल 2024 में शांति का नोबेल पुरस्कार जापान को मिला है। यही वे बातें हैं, जिनके कारण मैं शिंतारो इशिहारा पर लिख रहा हूं।

क्रूर बनते छात्र – अटामिक हमले से भुट्टे की तरह जल-मर गये लाखों लोगों को देखकर व विश्वयुद्ध में मिली हार से हर जापानी युवा अपने जीवन से हताश व निराश हो चुका था। वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो चुका था – क्या करे, न करे। रास्ते में जो कुछ भी कोई करता था, दूसरा भी उसमें शामिल हो जाया करता था, श्शराब के नशे में जब वे एक बड़ी उम्र के राहगीर से – जो उनके प्रतिद्वंद्वी स्कूल का छात्र भी रहा था – उलझने लगे तब उसने इन्हें डांटा। पर इन पर मस्ती सवार थी और उसने गुस्से में भरकर इनमें से एक को चांटा जड़ दिया। तभी साहारा आगे बढ़ा और उसके पेट पर जोर से प्रहार किया। आदमी चीखकर आगे झुका। उसके झुकते ही साहारा ने उसके मुंह पर एक घूंसा जमाया और वह लड़खड़ाकर पीछे दूर जा गिरा। लड़ाई बहुत जल्द खत्म हो गई, इससे साथियों को जरा निराशा भी हुई। लेकिन इस घटना के परिणामस्वरूप तात्सुया साहारा क्लब के स्थायी सदस्य के रूप में स्वीकार कर लिया गयाश्1 ;ताइयो नो किसेत्सु, 74.75द्ध। इस तरह का व्यवहार केवल दूसरों के प्रति था - ऐसा नहीं है। वे अपने मां-बाप के प्रति भी वैसे ही क्रूर थे। एक लड़का अपनी मां को इसलिए पीट देता है कि वह अपने लिए एक प्रेमी रख ली थी। तात्सुया तो अपने पिता के प्रति भी कठोर था। उसने अपने को महान बाक्सर साबित करने के लिए पिता के पेट में ऐसा घूंसा मारा कि उन्हें मुंह से खून गिरने लगा था और वे हस्पताल में भर्ती हो गए थे। उसने कभी पिता से माफी भी नहीं मांगी।

दोस्ती का मतलब – युवकों में दोस्ती का मतलब था, उनके अपराध के कामों में सहयोगी होना, श्उनमें दोस्ती का मतलब था अपराध के कार्यों में सहयोगी होना। अपने उद्दंडतापूर्ण और अनैतिक कार्यों से – जिनके लिए केवल उनकी जवानी को ही दोषी नहीं ठहराया जा सकता था – उनके बीच एक विशेष भाईचारा उत्पन्न हो गया था और ये

काम मानो उन्हें गोंद की सख्ती से आपस में जोड़ने में सहायता करते थे[2] (ताइयो नो किसेत्सु, 89)। उल्लेखनीय बात है कि यह जापान का नया कल्चर विकसित हो रहा था, जो उनका अपना नहीं था, बल्कि अमेरिकी हमले और जापान की बरबादी से उपजा था। उनके लिए सचमुच यह बंजर भूमि थी, जिस पर वे खड़े थे। इसीलिए उपन्यासकार ने उस दौर को 'सान जेनेरेशोन' (सन जेनरेशन) का नाम दिया है, जिसके केंद्र में उदंडता, हिंसा और अनैतिकता थी और यही जापानी युवाओं के जीवन का आधार बन चुका था। यह जेनरेशन उद्दंड था, क्रूर था और बर्बर था।

उदंडता - तत्कालीन युवा अपने मन की करते थे। वे किसी की नहीं सुनते थे। वे मनमौजी थे, जिसमें नैतिकता नाम की कोई चीज नहीं होती थी। उसे उदंडता का नाम देना ही सही होगा, "लोग प्रतिरोध, दायित्व और नैतिकता की बातें करते हैं। मैं क्यों इनकी परवाह करूं' दूसरे जो सोचते हैं, उससे मुझे क्या सरोकार! जो मैं चाहता हूं, वही करूं – मैं सिर्फ यही कर सकता हूं"[3] (शोकेइ नो हेया, 15)। तत्कालीन जापानी युवकों का शगल था गाली देना, सिगरेट व शराब पीना, गुस्सा करना, पैसे छीनना, गलत धंधा करना, सेक्स, रिवाल्वर रखना और लड़ना। इसके लिए वहां के न्यू मून जैसे रेस्तरां माकूल जगहें थीं। पहले र्योजी और कात्सुमी सभी प्रकार के उपद्रवों – शराबखोरी, औरतबाजी और मारपीट में साथ-साथ रहते थे, "एक बार बड़े दिन पर, जब वे हाईस्कूल की तीसरे साल में थे, वे कैबरे का मजा लेने एक होटल गए हुए थे। एक होस्टेस ने उन्हें पहचाना और 'हैलो' करके वह उनकी मेज तक आई। वह जिस अमेरिकी सैनिक के साथ बैठी हुई थी, उसे यह बुरा लगा, और जब वह लौटी तो उसने उसे एक थप्पड़ मारा। र्योजी ने यह देख लिया। उसने लपक कर सिपाही को धर पकड़ा और हाल के बीचोंबीच खींचकर उसकी खासी मरम्मत की। दूसरा सिपाही पहले की सहायता के लिए उठा ही था कि कात्सुमी ने उसे दो लातें जमाईं और उसे भी जमीन पर ढेर कर दिया। इसके बाद र्योजी और कात्सुमी ने बैंड को 'जिंगल बेल' गाना बजाने को कहा और दोनों ने धराशायी सिपाहियों के ऊपर खड़े होकर नाचना शुरू कर दिया। बाकी लोग भी, जो काफी नशे में थे – ताल देते रहे"[4] (वही, 23.24)।

दुश्मनी और बदले की भावना – युवा किसके दोस्त हैं, किसके दुश्मन - पता ही नहीं चलता था। वे पल-पल अपने विचारों में जीते थे, मरते थे और वह सब कुछ करते करते थे, जो उनके मन में आता था। कात्सुमी और र्योजी पहले पक्के दोस्त थे। लेकिन कात्सुमी दुश्मन बन गया था, जबकि र्योजी उसे अपना दोस्त ही मानता था। ताकेशिमा कात्सुमी का दुश्मन था, जो अब दोस्त बनकर र्योजी का धन छीन लेता है। वादे के मुताबिक कात्सुमी र्योजी के लूटे पैसे में से अपना हिस्सा मांगने शराबखाने जाता है। वहीं ताकेशिमा और उसके दल के सारे लोग बैठकर शराब पी रहे थे। वह जैसे ही तीस प्रतिशत हिस्सा मांगता है, ताकेशिमा के लोग उसे बुरी तरह पीटते हैं। कोई उसकी आंखों में शराब उड़ेल देता है तो कोई घूंसे मारकर जमीन पर गिरा देता है। कोई उसी के बेल्ट से उसके दोनों हाथ बांध देता

है तो कोई पेट को घूंसे से रौंद देता है, श्ताकेशिमा, जिसका व्यवहार पहले संयत था, अब पागलों की तरह उछल-कूद रहा था और हंस रहा था। वह उस लड़के की तरह खुश था, जो अपनी सेना का जनरल हो और दुश्मन जिसके पैरों तले पड़ा हो। बदले की भावना उसमें बच्चों जैसी थी, बड़ों से कहीं ज्यादा कठोर। अपने धराशायी शत्रु के सामने कूदता हुआ वह कभी उस पर घूंसे बरसाने लगता, कभी लातें चलाने लगता। उसने कात्सुमी के पेट पर भी लात जमाई और चूंकि इससे ज्यादा कष्ट होता दिखा, उसने और भी लातें जमाईं। कात्सुमी ने मुंह से बहुत-सा खून और थूक उगला और यह सब ताकेशिमा की सफेद कमीज पर छिटककर आ गिराश्[5] ;शोकेइ नो हेया, 30द्ध।

उपद्रवी – छात्र वर्ग उपद्रवियों में तब्दील हो चुका था। उपद्रव ही उनका खेल था, शगल था। वास्तविक खेल में जीत या हार कोई मायने नहीं रखता था। मायने रखता था तो केवल उपद्रव, श्उस रात जीत हो या हार, उसे मनाने के लिए तोक्यो की सड़कों पर लड़कों की भारी भीड़ जमा थी। विजेता स्कूल के लड़कों द्वारा किये जाने वाले सम्भावित उपद्रव के कारण लोगों ने दुकानें बंद कर दी थीं। बहुत-से छात्रों के लिए साल में यही एक दिन था, जब उन्हें स्कूल की वाहियात ड्रेस पहननी पड़ती थी। ..... पुरानी परम्परा तो यह थी कि मैच खत्म होने के बाद हर स्कूल के छात्र शहर के विभिन्न भागों में बंट जाएं और अलग-अलग अपने जश्न मनाएं। इसके परिणामस्वरूप, जगह-जगह झगड़े होते और जो भी इनमें फंस जाता, उसकी बुरी गत बनती। रात जैसे-जैसे गहराती जाती, ये उपद्रव भी बढ़ते जातेश्[6] ;शोकेइ नो हेया, 39द्ध।

नशाखोरी – पूरा युवा वर्ग नशेड़ी बन चुका था। चाहे लड़का हो या लड़की – सभी बराबर थे। लड़कियां भी शराब, बीयर और सिगरेट लेती थीं और इस तरह वे भी लड़कों की बराबर नशा करती थीं, श्अकिको की बड़ी-बड़ी आंखों और असामान्य चेहरे के सामने क्योको, दूसरी लड़की एकदम बच्ची लगती थी। उसने सिगरेट निकाली और ताकेदा से उसे सुलगवाकर पीने लगी, तो कात्सुमी उसे देखकर मुस्कराया। वह सिगरेट पीती हुई भी बच्ची ही लगती थीश्[7] ;शोकेइ नो हेया, 41द्ध। शराब और पैसा उस वक्त बहुत ताकत थी। युवा इसी में उलझे हुए थे। शराबी औरतों के संबंध में ताकेदा की समझ बिलकुल स्पष्ट थी। उसकी दृष्टि में जो लड़की शराब पीये वह बिस्तर पर जाये बिना नहीं रह सकती। युवा जानते थे कि जिंदगी बहुत छोटी होती है। इसलिए वे हर हाल में भोग में लिप्त रहते थे। दरअसल, शराब के नशे में ही नये-नये और क्रिएटिव विचार आते हैं।

सेक्स – युवक औरतखोरी में लिप्त थे और युवतियां पुरुषखोरी में। दोनों भोग में लिप्त थे। वही उनका जीवन था। वे अभी और यहीं जी लेना चाहते थे। अगले दिन का इंतजार किसी को नहीं था। वे क्षणजीवी बन गये थे। युवक वर्जिन लड़की तलाशते थे तो लड़कियां हृष्ट-पुष्ट खिलाड़ी युवक। तात्सुया और एइको ऐसे ही थे। तात्सुया यौन सुख के लिए एइको के साथ बाक्सिंग प्लेयर बन जाता था, श्तात्सुया को बाक्सिंग में जो मजा आता था, वही मजा उसे एइको के

संपर्क में मिलता था। बाक्सिंग के रिंग में चोट खाकर गिर पड़ने पर उसे कष्टमय सुख की जो एक विशेष अनुभूति होती थी, कुछ वैसी ही अनुभूति उसे अपनी दोस्त एइको के साथ होती थी[8] (ताइयो नो किसेत्सु, 73)। लेकिन व्यावहारिक जीवन में वह बेहद क्रूर और असंवेदनशील था। लड़कों की तलाश होती कि उन्हें वर्जिन लड़कियां ही मिलें। उन्हें पाने के लिए उनके पास जो कुछ भी होता था, उसे गिरवी रख देते थे। यहां तक कि कई दोस्त मिलकर 'मजा' करने के लिए ढेर सारा पैसा इकट्ठा करते थे।

चांद का महत्व - तात्सुया और एइको समुद्र में जाकर उद्दाम वेग के साथ काम-सुख का आनन्द लेते हैं। आज उन दोनों को पहली बार असीम तृप्ति का अहसास हुआ था। आज की इस घटना से एइको को चांद की रोमांटिक शक्ति में यकीन हो आया। उल्लेखनीय है कि जापान में 'मून व्युविंग' को बहुत सिद्दत से महसूस किया जाता है। प्रेम और आनन्द के लिए चांद देखना बहुत अच्छा होता है, "एइको ने चांद को देखा और सोचा कि वह सचमुच किसी पुरुष को प्यार कर सकती है। उसके मन में इच्छा जगी कि चांद उन दोनों के ऊपर सूर्य जैसी तेज रोशनी से चमकता रहे। पहली दफा उसे चांद की रोमांटिक शक्ति में विश्वास हुआ"[9] (ताइयो नो किसेत्सु, 105)। उल्लेखनीय है कि जापान में चांद सर्वाधिक महत्व रखता है, जबकि सूरज कम। सूरज उद्दंड है, क्रूर है और बर्बर है।

पैसा, और पैसा – युवाओं में पैसे बनाने की होड़ लगी रहती थी। पैसा बनाओ - चाहे जैसे भी हो। पैसा बनाने की विविध योजनाओं में डांस पार्टी आयोजित करने की योजना सभी दृष्टियों से अच्छी रहती थी। लेकिन चिंता यह होती थी कि एकत्रित धन को दूसरे स्कूलों के छात्र छीन न लें, "काफी संख्या में टिकट बिकने और हाल ठसाठस भर जाने पर भी एक बहुत बड़ी चिंता यह होती थी कि दूसरे स्कूलों के विद्यार्थी एकत्रित धन को छीनने का प्रयत्न न करें। अतः आयोजकों के लिए बहुत सफाई से सारा धन हटा देना आवश्यक होता था"[10] (शोकेइ नो हेया, 20)। लेकिन पैसे बनाने के लिए दुश्मन भी साथ हो लेते थे और दोस्त को भी लूट लेते थे। ताकेशिमा और कात्सुमी दोनों दुश्मन हैं और योंजी कात्सुमी का दोस्त है। लेकिन पैसे बनाने के लिए कात्सुमी ताकेशिमा के साथ मिलकर प्लान बनाता है और योंजी का सारा पैसा लूट लेते हैं। प्लान के मुताबिक ताकेशिमा पैसा छीनने में कामयाब हो जाता है।

'प्रेम' शब्द मजाक का सूचक - इस नये जमाने के लड़कों में 'प्यार' शब्द एक मजाक की तरह था। "उसके दोस्तों के बीच भावनाओं और खास तौर पर प्यार को भौतिकतावादी दृष्टि से देखा जाता था – 'प्यार' शब्द का प्रयोग अक्सर तिरस्कार के भाव से ही किया जाता था। वे इसका प्रयोग उन लड़कों का मजाक उड़ाने या तंग करने के लिए करते, जिन्होंने औरत को अभी तक पाया नहीं था। उनमें यह रिमार्क अक्सर दिया जाता था: 'अमुक प्यार में पड़ गया है यानी उसे अभी तक कोई औरत मिली नहीं है"[11] (ताइयो नो किसेत्सु, 88)। युवकों की नजर में वे लड़की के लिए एक नया ड्रेस हैं और लड़की उनके लिए एक पुराना सूट। उल्लेखनीय है कि जापानी कल्चर में 'प्रेम' बहुत महत्व

रखता है। वहां यदि किसी को मजाक में भी ष्आई लव यूष कह देता है तो . जिसको कहा जाता है . वह वर्षों तक इंतजार करता है। इस दृष्टि से कुणाल बसु का ष्द जापानिज वाइफष (2008) उपन्यास देखा जा सकता है।

एक-दूसरे के लिए ष्वस्तुष – लड़का हो या लड़की - तब दोनों एक दूसरे के लिए ष्वस्तुष मात्र थे। प्यार में साफगोई और हिम्मत दोनों जरूरी होते हैं, और कात्सुमी ने अकिको के साथ यही किया था। श्जब मुझे कोई लड़की अच्छी लगती है, मैं उसे हासिल करने की कोशिश करता हूं....प्यार की बातें करके अपना वक्त बरबाद नहीं करताश कात्सुमी ने कहा। ..... अकिको एक क्षण रुकी और यह कहते हुए उसके गाल लाल हो आए, श्अगर यह बात है तो मुझे भी यही पसंद हैश[12] ;शोकेइ नो हेया, 57द्ध। चार महीने बाद कात्सुमी अकिको से अलग हो गया। उसने तर्क दिया कि उसमें अब कुछ भी नयापन नहीं है। उसमें अब उसकी दिलचस्पी खत्म हो गई है। वस्तु को पाकर सहजता से जी लेना ही जीवन का ध्येय व प्रेय था। कात्सुमी की दृष्टि में जब वह शराब के नशे में होता है तो उसे बस लड़की और मारपीट की ही सूझती है। उनकी नजर में भावनाओं को दबाने और फ्रस्ट्रेट होने से सहज जिंदगी बिताना अच्छा है। उसे बकवास में यकीन नहीं था। उसे कर्म करने और भोगने में यकीन था। तात्सुया की क्रूरता और निर्ममता दिनों-दिन बढ़ती ही चली जाती है। उसे एइको को सताकर अतीव खुशी होती और अपनी शक्ति पर अभिमान होता।

पिता न बनने की इच्छा – वे आनन्द के लिए रोज नई वस्तु रूपी लड़का-लड़की बदलते रहते थे। ऐसे में लड़की के लिए भी बता पाना मुश्किल था कि उसके पेट में पल रहा बच्चा किसका है। एइको प्रेग्नेंट हो जाती है और यह बात तात्सुया को बताती है तो वह यकीन नहीं करता। वह कई लड़कों का नाम बताता है, जिसके साथ उसके संबंध रहे हैं। वह भी इनकार नहीं करती। वह स्पष्ट शब्दों में कहती है कि उसके पेट में पलता बच्चा उसी का है। लेकिन ठीक से हिसाब लगाने पर वह भी गलत लगेगा, श्ठीक हिसाब लगाने पर यह तुम्हें भी गलत लगेगा। अब पूरे तीन महीने हो चुके हैं।श

श्तो फिर पूछना क्या है, कर लोश तात्सुया ने उत्तर दिया। श्लेकिन याद रखना, जो भी कष्ट है, तुम्हें ही झेलना होगा। और यह भी मत सोचना कि इससे हमारे संबंध ज्यादा समीप आ जायेंगे। बच्चे की मदद से स्त्रियां अक्सर आदमी को फंसाया करती हैंश[13] ;ताइयो नो किसेत्सु, 119.20द्ध। तब का लड़का नहीं चाहता था कि वह इतनी जल्दी बाप बने, जबकि आज लड़कियां नहीं चाहतीं कि वह बच्चे को जन्म दे। यही कारण है कि जापान आज जनसंख्या की कमी का सामना कर रहा है। घटती आबादी जापान की आज की सबसे बड़ी चिंता है।

यौन मनोविज्ञान में माहिर – युवा यौनिक सुख में लिप्त रहते थे। यही कारण है कि वे स्त्रियों को फांसते थे, शराब व नशा कराते थे और फिर उन्हें असली मकसद पर ले आते थे। सेक्स करने से पहले युवा लोग जमकर नशा करते थे।

नशे के बाद वे यौनानंद में लिप्त हो जाते थे - उपन्यासों में इसका भी वर्णन मिलता है। तास्सुया खुद नशे की हालत में ‘औरत और मारपीट’ पर केंद्रित रहता है। ताकेदा की नजर में शराब पीने वाली औरतों को सेक्स चाहिए ही होता है। शराबी औरतों के संबंध में ताकेदा की समझ बिलकुल स्पष्ट थी कि हर लड़की जो शराब पी-पिलाती है, बिस्तर पर जाएगी-ही-जाएगी। लड़के हर नई और वर्जिन लड़की को शराब पिलाते थे, वह भी जापानी साके। वे भी इसमें चढ़-बढ़ कर हिस्सा लेती थीं। बाद में लड़के उनकी शराब में नींद की गोलियां मिलाकर उन्हें नींद में ले आते थे और फिर उनके साथ यौन संबंध बनाते थे, ‘हम लड़कियों को खाली नहीं जाने देना चाहते, है न’ तो जब तक वे शराब पीने में लगी हैं, हम कुछ गोलियां ले आयें’[14] (शोकेइ नो हेया, 42)। दरअसल, नशा के बाद ही उनकी बुद्धि चलती थी, नये विचार आते थे। यही कारण है कि लेखक का यौन मनोविज्ञान काबिल-ए-तारीफ है।

मौत को मात देती साहस – युवक बहुत साहसी थे। उन्हें मौत से डर नहीं लगता था। कात्सुमी इसका प्रतिनिधि चरित्र है। मौत को मात देती कात्सुमी का हुलिया देखकर अकिको की यादें ताजा हो जाती हैं और सोचती है, ‘क्या यह वही प्रतिरोध की भावना थी, किसी भी स्थिति में हार न मानने की वृत्ति थी, जिसने उसे कात्सुमी की ओर आकृष्ट किया था’ जब उसने पहली बार उसे बिस्तर पर डाला था – और उसके बाद भी जब-जब डाला – तब क्या मजाक उड़ाती-सी उसकी यह पागल दृष्टि ही उसे बरबस अपनी ओर नहीं खींचती थी’[15] (शोकेइ नो हेया, 62)। दरअसल, वे इतने संवेदनहीन हो गये थे कि उन्हें मौत से डर ही नहीं लगता था। यही वह उम्र भी है, जहां जांबाजी दिखाई जाती है। वे मरकर, मारकर, भोगकर, क्षणभर जीकर ही अपनी जांबाजी पेश कर रहे थे।

वहशीपन – मारने की स्थिति में युवक वहशीपन के हद से भी गुजर जाते थे। तेजुका और यामायोशी के साथ एक तीसरा लड़का भी वहां आ धमका है। इनके आने के बाद इशिकावा के दल के लोग कात्सुमी को तेजुका के हाथों में सौंप देते हैं। वे इन्हें कात्सुमी की हत्या के लिए उकसाते जाते हैं। कात्सुमी न देखते हुए भी खड़ा होने की कोशिश करता है। उसके बाद लोग फिर उसे बेरहमी से पीटते हैं, ‘किसी ने व्हिस्की का एक गिलास उसे दे मारा और उसकी आंखें फिर बेकार हो गईं। एक और लड़के ने उसे पीछे से लात जमायी। किसी और ने बोतल मेज पर पटककर फोड़ डाली और टूटी बोतल उसके पेट में घुसेड़ दी। खून चारों ओर फैल गया’[16] (शोकेइ नो हेया, 67)। वहशी युवकों की क्रूरता जारी रहती है। वहां का दृश्य हृदय विदारक है। दो लड़के कात्सुमी के पैर पकड़कर खींचते हुए पिछले दरवाजे से वे उसे बाहर लाते हैं और गली में डाल देते हैं। फिर उसी के ऊपर पैर रखते हुए वे गली के अंधेरे में गायब हो जाते हैं। दरअसल, यह वहशीपन का दौर दो से तीन घंटे तक चलता है। इस बीच जो क्रूरता व बर्बरता का खेल खेला जाता है, वह अपने-आप में बेमिशाल है। बार खुला रहता है, शराब का दौर चलता रहता है और पिटाई अनवरत जारी रहती है। इन दो से तीन घंटों में अनेक लोग बुलाये जाते हैं, जो कात्सुमी के दुश्मन हैं और

वे सभी वीभत्स तरीके से कात्सुमी को तड़पा-तड़पाकर मारते जाते हैं। अंत में, वे उसे कूड़े की तरह अंधेरी गली में फेंक कर चले जाते हैं।

उपन्यास का तकनीकी पक्ष – शिंतारो इशिहारा के उपन्यासों में अनेक प्रयोग देखने को मिलते हैं। लेकिन इस चौबीस वर्षीय लेखक ने अपनी लेखनी में अनेक ऐसे प्रयोग किये हैं या मिलते हैं, जो उसकी सफलता की कहानी कहते हैं। कुछ खास तकनीक, जो उन्होंने प्रयोग किये हैं, उद्‌धृत हैं –

पात्र-परिचय – शिंतारो इशिहारा ने उपन्यास के शुरु में ही पात्रों का परिचय दिया है। यही प्रयोग ‘कागी’ में भी मिलता है। इस प्रयोग से पाठकों को पहले ही पता चल जाता है कि कौन क्या है, किसका दोस्त है, किसका दुश्मन है, कौन लड़की है, किस दल में कितने लोग हैं आदि-आदि। यह प्रयोग उपन्यास को हल्का बना देगा – ऐसा लगा था। लेकिन उपन्यास पढ़कर मुझे लगा कि पात्रों का परिचय दे देने से उपन्यास की प्रभावमयता में कोई बट्टा नहीं लगा है। लेखक ने इसलिए भी पात्र परिचय दिया होगा कि उसके पाठक बुद्धिजीवी नहीं थे, बल्कि वे विद्यार्थी थे, जो स्कूल, कालेज व यूनिवर्सिटियों में पढ़ रहे थे। उन्हें सही-सही व आसानी से समझ में आ जाये – इसी को ध्यान में रखकर लेखक ने ऐसा किया होगा। दूसरी बात कि लेखक भी नया था। पहले उपन्यास के प्रकाशन के वक्त उनकी उम्र मात्र चौबीस साल थी।

कथा का क्लाइमेक्स पक्ष सबसे पहले देना – उपन्यासकार ने कथा का संयोजन करते हुए क्लामेक्स के ठीक पहले का भाग सबसे पहले रखा है। बीच में कथा का आरम्भिक भाग है और अंत में क्लाइमेक्स है, जो धीरे-धीरे समाप्ति की ओर बढ़ता है। वास्तव में, यहां क्लाइमेक्स है ही नहीं, बल्कि एक साधारण अंत है, जिसकी स्वाभाविकता पाठक के मन-मस्तिष्क में पहले से ही बन जाती है। हालांकि कथा के इस साधारण अंत में पाठक की उत्सुकता भी खत्म हो जाती है। लेकिन उपन्यास का आरम्भ इतना प्रभावशाली है कि साधारण अंत में भी साधारणता का पता नहीं चलता और आरम्भिक प्रभावमयता आखिर तक बनी रहती है। पाठक के पास सोचने-समझने के लिए कुछ नहीं बचता।

युवा-सोच को उपन्यास के पहले ही हर्फ में अंकित करना – उपन्यास की मूल विशेषता, विचार व दर्शन को लेखक ने उपन्यास के शुरू होते ही अपने विशेष कथन के रूप में पेश कर दिया है। इससे उपन्यास का दर्शन व विचार पाठक को पहले ही मिल जाता है। यह लिखने का लेखक का उद्देश्य निश्चित रूप से अपने युवा पाठकों को सीधे आकर्षित करना था। निश्चित रूप से उपन्यास का जापानी पाठक अपने मनोनुकूल मनोवृत्ति को पाकर जितना खुश हुआ होगा, उतना और किसी चीज से नहीं। वह तत्कालीन पाठकों को खूब प्रभावित किया होगा, क्योंकि उसके

पाठक लेखक के ही हमउम्र और कुछ तो उससे छोटे रहे होंगे। उन्हीं की मनोवृत्ति को ध्यान में रखकर लेखक ने इसका प्रयोग किया है। यही वजह है कि लेखक ने जिनकी बात लिखी है, उनका दर्शन पहले ही बता दिया है। इसी मनोवृत्ति ने लेखक को तत्कालीन युवाओं का असली हीरो बना गया था तथा उपन्यास द्वारा किशोर वय के पाठकों के बीच जाकर एक आदर्शात्मक दिशा देने का प्रयास किया गया होगा।

उपन्यास का विशेष पक्ष – शिंतारो के इन उपन्यासों में जो विशेष पक्ष है वह है उसका दर्शन। यह दर्शन इतना प्रभावी है कि युवा उसमें अलग से प्रवेश नहीं करता, बल्कि इस उम्र में युवा वही करते ही हैं। वह उम्र ही ऐसी है, जो उन्हें युवा बनाती है। यही युवा दर्शन इन उपन्यासों में ज्यों-का-त्यों उभरकर प्रस्तुत हो गया है। युवा दौर के दर्शन का ज्यों-का-त्यों वर्णन ही उपन्यासों का प्राण है। दरअसल, खुद लेखक भी युवा था। वह वही लिख रहा था, जिसे वह जी व देख रहा था। अपने आस-पास हर दिन जो घट रहा था – वह वही लिख रहा था यथा तथ्य। इन उपन्यासों में कल्पना का कोई पुट नहीं है। यही इन उपन्यासों की खास विशेषता है। वैसे भी, युवा युव-दर्शन व युव-जीवन में यूं ही बहते हैं, जैसे कोई पहाड़ी नदी में बारिस का पानी उफनता हुआ बहता है बिना किसी सोचे-समझे। इस बहाव में जो कुछ रोड़ा बनता है वह टूट-फूटकर तुरंत बिखर जाता है।

साहस का अद्‌भुत उद्दाम वेग - इन उपन्यासों का एक बड़ा दर्शन है उद्दाम साहस, जिससे मौत भी डर जाता है। उस दौर का सारा साहित्य, कला व फिल्म – जो कुछ भी है, सबमें वही उद्दाम साहस मिलता है, जो मौत को भी मात देती है। उपन्यासों के सारे पात्र परिणाम की चिंता से मुक्त हैं। वे पुलिस से बचते जरूर दिखते हैं, लेकिन कोई और डर या खौफ उन्हें नहीं डिगाती। वे जो कुछ भी करते हैं पुलिस से बचकर करते हैं। उनका स्पष्ट कहना है कि पुलिस की गिरफ्त में न आओ। वे अमेरिकी सैनिक को भी ऐसे कुचल देते हैं, जैसे कोई खिलौना हो। यह दर्शन स्वाभाविक भी है। खुद लेखक व उसका भाई जिन फिल्मों के नायक हैं, उनमें झुंड-के-झुंड छात्र-छात्राएं अनायास ही छत से कूद जाते हैं, किस को भी मार देते हैं, खुद को मार देते हैं, ऐसे जैसे वे कोई खेल खेल रहे हों - चिंता व परिणाम से मुक्त। यही तो युवापन है और यही इन उपन्यासों में दर्ज हो गया है। उपन्यासों में विचार व यथार्थ दोनों हावि हैं। यहां मौत और परिणाम के डर का एक कतरा भी मौजूद नहीं है। यही तो तरुणाई व युवा दर्शन है। अलबत्ता, लेखक अपने पहले उपन्यास के प्रकाशन के साथ ही टोक्यो के युवाओं में नायक बन गया था। उसका आदर्श युवाओं के सर चढ़कर बोल रहा था। यही उनका दर्शन था। तब लोग उसी में जीते-मरते थे।

अनुभव की गहराई व परिपक्वता – मात्र चौबीस साल की उम्र में लेखक जिन भावों व पक्षों को चित्रित करता है, उसका हर तह व रेशा उघाड़ कर प्रस्तुत कर देता है। चाहे सेक्स हो, शराब हो, लड़की हो या यौन मनोवृत्तियां हों – वह सभी में परिपक्व है। लेखक अपने भावों व विचारों की परिपक्वता का लोहा मनवा देता है। इतनी कम उम्र में

उसके अनुभव की प्रामाणिकता चौंका देती है। बाद में लेखक भी कुछ ऐसे काम करता है कि जापान एक नई दिशा को प्राप्त करता है।

प्यार के संदर्भ में उसका एक अनुभव में पगा कथन यहां उल्लेखनीय है, शआदमियों के लिए प्यार ऐसी भावना है, जिसे हर समय जाग्रत नहीं रखा जा सकता। जब शरीर से शरीर मिलता है, क्या तभी यह भावना सबसे ज्यादा जाग्रत नहीं होतीद इस अवसर पर स्त्री और पुरुष पास आकर एकाकार हो जाते हैं और यह चेतना अवसर बीत जाने के बाद भी जाग्रत बनी रहती है – मानो आंख के द्वारा देखे गये दृश्य की शेष छाया हो, जो दृश्य समाप्त हो जाने के बाद भी कुछ देर तक वहां से हटती नहींश[17] ;ताइयो नो किसेत्सु, 105.6द्ध।

लेखक इतना साहसी है कि वह अमेरिका को ष्नष कहने की हिम्मत करता है। वह आगे चलकर जापान की अगुवाई करता है और अमेरिकी मित्र राष्ट्रों के हर फैसले को नकारता है। उसी का प्रतिफल है कि युवाओं में व्याप्त अमेरिकी प्रभाव को कुछेक वर्षों में ही जापानी कल्चर से विदा ले लेना पड़ता है। उसके विचारों ने जापान में एक सैलाब ला दिया था - चाहे कुकुरमुत्ते की तरह उग आयी प्रवृत्तियों का चित्रण हो या फिर उन प्रवृत्तियों को धो-पोंछना हो – वह सबमें अव्वल रहा है। उसी की देन थी कि जापान बहुत कम समय में दुनिया का सिरमौर बन सका, जिसमें जापानी जीवन-दर्शन अपने उद्दाम वेग से हिलोरें लेता रहा है।

उम्र बढ़ने के बाद लेखक अपनी लेखनी से खुद शर्मिंदा होता है। वह फैसला करता है कि उसकी लेखनी को हमेशा के लिए मिटा देना है, जिनमें तत्कालीन बीस वर्षों का यथार्थ चित्रण व लेखन था। वह सारे प्रकाशकों को उसकी सारी किताबें नष्ट करने का आदेश देता है तथा अनुवाद, प्रकाशन, प्रसारण व वितरण सब पर हमेशा के लिए प्रतिबंध लगा देता है। परिणामस्वरूप, तत्कालीन दौर की उसकी सारी किताबें नष्ट कर दी गई हैं। यहां तक कि उसकी किताबें जापानी भाषा में भी अब उपलब्ध नहीं हैं। हालांकि फिर भी कुछ किताबें अलग-अलग भाषाओं में उपलब्ध हैं, जैसा कि मुझे गूगल सर्च से पता चला। कुल मिलाकर, शिंतारो इशिहारा का व्यक्तित्व, कर्म और कृतित्व इतना विशाल है कि उन पर कई किताबें लिखी जा सकती हैं।

सन् 1945 से 1965 तक जापान के विश्वविद्यालयों, कालेजों तथा अन्य शैक्षिक संस्थानों में हिंसा, अपमान, बर्बरता व क्रूरता की वे जबरदस्त वारदातों हुईं, जो अपनी भयंकरता व क्रूरता के लिए संसार-भर में चर्चा का विषय बन गई। इशिहारा व उसके समकालीन लेखकों व कलाकारों ने अपनी कला के माध्यम से उसे खूब चित्रित किया और दुनिया में अपनी लेखनी का लोहा मनवाया। इशिहारा की रचनाएं तत्कालीन दौर के इतिहास की जीवंत दस्तावेज हैं। ऐसा

कल्चर जापानी इतिहास में पहले कभी नहीं देखा गया था। बार, कैबरे, शराब, औरत, पोर्न आदि से ठसाठस भरे इस देश में इतनी सुरक्षितता आश्चर्य की बात है।

जापानी साहित्य गल्प नहीं होता। वह कल्पनाप्रसूत नहीं होता, बल्कि यथार्थ होता है। वे थोड़ा लिखते हैं, लेकिन जो लिखते हैं, वह बहुत यथार्थ और विशिष्ट साबित होता है। यही कारण है कि जापानी साहित्य संसार-भर के साहित्यों से भिन्न तथा विशिष्ट है। वहां का साहित्य चमत्कारिक रूप में नवीन और आकर्षक है तथा जीवन के नितांत नये आयाम व्यक्त करता है। चाहे हाकाई हो, अवज्ञा हो, कागी हो या फिर इशिहारा के ये दोनों उपन्यास।

और, अंत में। हिंदी अनुवादक ने लेखक की मूल भावना के उलट अनुवाद कर दिया है, विशेषकर ‘ताइयो नो किसेत्सु’ का। इस उपन्यास में लेखक बताना चाहता है कि वह जो नई प्रवृत्ति वहां पनपी है, वह भाड़े का है, अमेरिकी है। वह प्रवृत्ति जापान की अपनी नहीं है। उल्लेखनीय है कि उक्त दौर की सारी प्रवृत्तियां जापानियों की अपनी नहीं हैं, बल्कि अमेरिकियों की दी हुई हैं। इसलिए इस उपन्यास के टाइटल का सही अनुवाद होता – ‘भाड़े का मौसम’। लेकिन अनुवादक ने अमेरिकी अंग्रेजी अनुवाद का ही हिंदी में अनुवाद किया है। अंग्रेजी में उपन्यास का अनुवाद ‘सीजन आफ वायलेंस’ है। हिंदी अनुवादक ने भी उसी को लिया है। इससे लेखक की मूल भावना खत्म हो गई है। सच में तो जापान की उक्त प्रवृत्ति का जनक अमेरिका है। उसके सैनिकों की क्रूर बर्बरता से जापान का इतिहास रक्त-रंजित है। हताशा व निराशा में, किंकर्तव्यविमूढ़ता में तत्कालीन जापानी युवाओं ने उसी प्रवृत्ति को स्वीकार कर लिया था। वास्तव में, लेखक ने यही बताना चाहा है। उल्लेखनीय है कि लेखक अमेरिका का धुर विरोधी रहा है। इसके लिए उसने एक अन्य लेखक के साथ मिलकर ‘वह जापान जो ना कह सकता है’ नामक निबंध लिखा था। यही निबंध शिंतारो इशिहारा के राजनीतिक जीवन की सबसे मूल्यवान वस्तु है, जिसने जापान को साहस के साथ अमेरिका जैसे मित्र राष्ट्रों के हर फैसले को नकारने का साहस दिया था। इस आवाज को लेखक ने ताउम्र उठाया और पूरी दुनिया में अमेरिका के परमाणविक हथियारों के खिलाफ माहौल बनाया। विश्व में निशस्त्रीकरण इसी की देन है। इसके साथ ही, जापान ने अपनी बची-खुची ताकत के बल पर देश को खड़ा कर दुनिया को बता दिया कि वह अकेले अपने दम पर कुछ भी कर सकता है। यह जापानियों की अपनी जिजीविषा और महान विरासत को दर्शाता है।

संदर्भ सूची –

1. इशिहारा, शिंतारो – शोकेइ नो हेया (सजाघर – अनु. महेंद्र कुलश्रेष्ठ), आलेख प्रकाशन, दिल्ली, 1977
2. इशिहारा, शिंतारो – ताइयो नो किसेत्सु (हिंसा का मौसम), वही

3. https://www.britannica.com/biography/Ishihara-Shintaro

4. https://en.wikipedia.org/wiki/Shintaro_Ishihara

5. https://www.google.com/search?sca_esv=88608bc906ee84a4&rlz=1C1CHBF_enIN1083IN1083&q=Season+of+the+Sun+Shintaro+Ishihara&spell=1&sa=X&ved=2ahUKEwiYkZ-p0_6JAxWQ-DgGHbitEvIQBSgAegQIDBAB&biw=1280&bih=585&dpr=1.5

6. https://www.goodreads.com/author/list/80244.Shintar_Ishihara

7. https://www.bookfinder.com/author/shintaro-ishihara/

8. https://www.abebooks.com/first-edition/Season-Violence-Stories-ISHIHARA-Shintaro-Charles/31386294312/bd

9. https://www.davidsheff.com/shintaro-ishihara

10. https://www.nytimes.com/2022/02/02/world/asia/shintaro-ishihara-dead.html